कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-2 (Social Science) Major - 01 [ANSWER KEY] HELD ON : 14/09/2025

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
Ans.	4	1	4	2	4	1	2	3	3	1	2	4	3	2	4	2	1	1	1	*
Q.	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
Ans.	1	1	4	3	1	1	3	1	2	4	3	2	2,3	4	4	3	2	2	2	4
Q.	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
Ans.	3	4	1	3	1	4	3	2	4	3	2	3	2	1	3	2	1	1	3	2
Q.	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
Ans.	2	2	4	1	3	4	2	4	3	1	4	2	3	1	2	1	2	2	4	1
Q.	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
Ans.	2	3	2	3	4	1	3	3	3	2	2	1	2	2	2	2	3	4	3	4
Q.	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120
Ans.	1	4	4	3	2	1	4	3	3	4	3	2	4	4	4	3	3	2	3	3
Q.	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140
Ans.	2	1	4	4	4	1	3	2	2	1	4	2	2	3	2	3	1	3	2	3
Q.	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150										
Ans.	2	1	3	3	2	1	2	1	2	1										

1. उत्तर (4)

व्याख्या:-

दक्षिण अरावली की प्रमुख चोटियाँ-

- सायरा (उदयपुर) - 900 मीटर
- लीलागढ़ (उदयपुर) - 874 मीटर
- नागपानी (उदयपुर) - 867 मीटर
- गोगुन्दा (उदयपुर) - 840 मीटर
- कोटड़ा/काटड़ा (उदयपुर) - 450 मीटर
- ऋषभदेव (उदयपुर) - 400 मीटर

नोट- 651 मीटर ऊँची सिरावास चोटी (अलवर), जो कि उत्तरी अरावली में स्थित है।

2. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **उच्चावच की दृष्टि से दक्षिणी-पूर्वी पठार/हाड़ौती का पठार का विभाजन-**

1. **अर्द्धचन्द्राकार पर्वत श्रेणियाँ**- हाड़ौती के पठार पर अर्द्ध-चन्द्राकार रूप में पर्वत श्रेणियों का विस्तार है, जो क्रमश: बूँदी एवं मुकन्दरा पर्वत श्रेणियों के नाम से जानी जाती हैं।

- **कोटा की पहाड़ियाँ**- इन्हें **मुकुन्दरा की पहाड़ियों** के नाम से भी जाना जाता है, जो मुख्यत: कोटा व आंशिक रूप से झालावाड़ में स्थित है। इनकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 335 से 503 मीटर है। चँदवाड़ा क्षेत्र में इनकी सर्वोच्च चोटी 517 मीटर ऊँची है।
- **डाबी का पठार** (बूँदी व कोटा की पहाड़ियों के बीच)

2. **नदी निर्मित मैदान**- बूँदी और मुकन्दरा पर्वत श्रेणियों से आवृत्त लगभग 7885 वर्ग किमी. का क्षेत्र चम्बल और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित मैदानी प्रदेश है। यह हाड़ौती पठार की सबसे बड़ी भू-आकृतिक इकाई है।
3. **शाहबाद का उच्च स्थल**- यह मुख्यत: बाराँ जिले का पठारी भाग है। हाड़ौती पठार का पूर्ववर्ती अपेक्षाकृत उच्च क्षेत्र है, जिसे 'शाहबाद उच्च क्षेत्र' कहा जा सकता है। यह क्षेत्र 300 मीटर की समोच्च रेखा से आवृत है और पश्चिम की ओर 50 मीटर तक पहुँच जाता है। इसका सर्वोच्च क्षेत्र कस्बा थाना में समुद्रतल से 456 मीटर ऊँचा है। यहाँ स्थित रामगढ़ झील एक क्रेटर झील है।
4. **झालावाड़ का पठार**- मुकन्दरा श्रेणियों के दक्षिण में लगभग 6183 वर्ग किमी. का क्षेत्र 300 से 450 मीटर की ऊँचाई वाला पठारी भाग है। यह भाग मालवा के पठार का अभिन्न अंग है और दक्षिण के पठार से समानता रखता है।
5. **डग-गंगधार के उच्च क्षेत्र**- यह मुख्यत: झालावाड़ जिले में स्थित है। यह हाड़ौती के पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। डंग-गंगधार का क्षेत्रफल 1429 वर्ग किमी. है, जो हाड़ौती के पठार की सबसे छोटी भू-आकृतिक इकाई है। इसकी औसत ऊँचाई 450 मीटर है।

3. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **पूर्वी मैदान**- राजस्थान का पूर्वी प्रदेश जिसमें एक ओर भरतपुर, अलवर के भाग, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, जयपुर, टोंक, भीलवाड़ा के मैदानी भाग सम्मिलित किए गए हैं तो दूसरी ओर दक्षिण में स्थित मध्य माही का क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित है।
- यह प्रदेश राज्य के लगभग 23.3 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।
- यह मैदान पश्चिम से पूर्व की 50 सेमी. समवर्षा रेखा द्वारा विभाजित है।
- इसकी दक्षिणी-पूर्वी सीमा विन्ध्यन पठार द्वारा बनाई जाती है।
- इस मैदान के अन्तर्गत चम्बल बेसिन, बनास बेसिन और माही बेसिन (छप्पन बेसिन) सम्मिलित हैं।

नोट- गौडवाड़ प्रदेश/लूणी बेसिन, उत्तरी पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश के अन्तर्गत अर्द्धशुष्क/बांगर प्रदेश का अभिन्न अंग है।

4. उत्तर (2)

व्याख्या:-

भू-आकृतिक प्रदेश	प्राकृतिक भू दृश्य
हाड़ौती प्रदेश -	डाबी का पठार
माही बेसिन -	वागड़ प्रदेश
मध्य अरावली -	परवेरिया दर्रा
घग्घर का मैदान -	नाली
बाणगंगा बनास बेसिन -	पिडमांट व मालपुरा-करौली मैदान

कलाम ACADEMY

5. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **राजस्थान की प्रमुख नदियों के उद्गम स्थल-**

नदी	**उद्गम स्थल**
लूनी -	नाग पहाड़ियाँ (अजमेर)
बनास -	खमनौर की पहाड़ियाँ (कुम्भलगढ़, राजसमंद)
पार्वती-	सिहोर की पहाड़ियाँ (मध्यप्रदेश)
घग्घर -	शिवालिक श्रेणी (हिमाचल प्रदेश)

6. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- राजस्थान की प्रमुख नदियों का अपवाह क्षेत्र (जलग्रहण) की दृष्टि से घटता क्रम- **बनास (27.48%) > लूनी (20.21%) > चम्बल (17.18%) > माही (9.46%) > बाणगंगा एवं गम्भीरी (8.47%)।**
- **उपलब्ध जल के आधार पर** राजस्थान की नदियों का व्यवस्थित अवरोही क्रम - **चम्बल, बनास, माही तथा लूनी**।
- **बनास**- राजस्थान में पूर्णत: बहने वाली सबसे लम्बी नदी।

7. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- बाराँ जिले में पार्वती नदी से बैंथली, ल्हासी (लासी), बिलास/विलास, अंधेरी, रेतरी, अहेली, कूल आदि सहायक नदियाँ मिलती हैं।

8. उत्तर (3)

व्याख्या:-

नदी	**समापन स्थल**
साबरमती -	खम्भात की खाड़ी
पश्चिमी बनास -	कच्छ का रण/कच्छ की खाड़ी
माही -	खम्भात की खाड़ी

9. उत्तर (3)

व्याख्या:-

फतेहसागर झील- पिछोला झील के उत्तर-पश्चिम में, उदयपुर

- इस झील का निर्माण 1687 ई. में **महाराणा जयसिंह** द्वारा करवाया गया था परन्तु बाद में 1888 में **महाराणा फतेहसिंह** द्वारा इसका पुनर्निर्माण करवाया इसलिए इसे फतेहसागर झील के नाम से जाना जाता है।
- इस झील के निर्माण हेतु बाँध का शिलान्यास ड्यूक ऑफ कनॉट द्वारा किया गया था। इसलिए इसे **कनॉट बाँध** के नाम से जाना जाता हैं।
- इस झील के मध्य एक द्वीप है जिस पर **नेहरू उद्यान** स्थित है।
- इस झील में एक **सौर वैधशाला** की स्थापना की गई है।

10. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान में जल संरक्षण की परंपरागत विधियाँ-

- **नेहट/नेहटा**- किसी तालाब या नाड़ी के निकट यह छोटा गर्तनुमा भाग होता हैं जिसमें तालाब या नाड़ी के अतिरिक्त जल को संचित किया जाता है।

टोबा-

- यह देखने में नाड़ी जैसा ही होता है परन्तु किसी नाडी को कृत्रिम रूप से खोदकर अधिक गहरा कर दिया जाता है तो उसे टोबा कहा जाता है।
- इसके जल का उपयोग पेयजल व सीमित सिंचाई के लिए किया जाता है। इसमें वर्षा जल को संग्रहित किया जाता है।

जोहड़-

- यह परम्परागत जल संरक्षण की कृत्रिम विधि है जिसमें वर्षा जल को एकत्रित करने के लिए खुदाई करके गहरा खड्डा बनाया जाता हैं तथा कई स्थानों पर इसके चारो तरफ पक्की दीवार व सीढ़ियाँ तथा छतरियाँ भी बनाई गई हैं।
- ये शेखावाटी क्षेत्र में अधिक प्रचलित है जहाँ इन्हें पानी के कच्चे कुएँ भी कहा जाता है।
- जोहड़ पद्धति को पुनर्जीवित करने का श्रेय राजेन्द्र सिंह (अलवर) को जाता है। इन्हें जोहड़ वाले बाबा के नाम से जाना जाता है। इन्हें रैमन मैग्ससे अवार्ड दिया गया।

कलाम ACADEMY

बेरी-

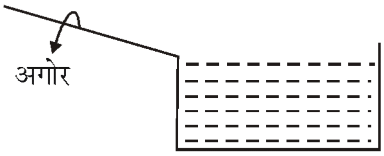

- यह भी जल संरक्षण की एक कृत्रिम विधि है, जिसमें किसी बड़े जल स्रोत जैसे तालाब, झील आदि के निकट दो-तीन फीट चौड़ाई व 15-20 फीट गहराई की संकड़ी कुई बनायी जाती है तथा इसके चारों ओर की दीवार पर सूखे पत्थर लगा दिये जाते हैं ताकि तालाब, झील आदि से रिसता हुआ जल इसमें एकत्रित होता रहें।
- वाष्पीकरण को रोकने हेतु इसको ऊपर से ढक दिया जाता है, यह सामान्यत: पेयजल के उपयोग हेतु बनायी जाती है, कई बार घर के आँगन के एक कोने में भी ऐसी छोटी कुई बनाई जाती है तथा आँगन का ढाल उस कुई की तरफ रहता है, इसे अगोर कहा जाता है।
- यह पश्चिमी राजस्थान में/ अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र (जैसलमेर व बीकानेर) में मुख्यत: पाई जाती है।

11. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- घोसुण्डा बाँध चित्तौड़गढ़ जिले में बेड़च नदी पर स्थित है।

चम्बल नदी पर स्थित प्रमुख बाँध-

- गाँधी सागर बाँध - मंदसौर (मध्यप्रदेश), प्रथम चरण में निर्मित।
- राणा प्रताप सागर- रावतभाटा (चित्तौड़गढ़) [सर्वाधिक भराव क्षमता वाला बाँध]
  राणा प्रताप सागर बाँध चम्बल परियोजना के द्वितीय चरण में निर्मित है, जो कि चम्बल नदी पर स्थित सबसे लम्बा बाँध है।
- जवाहर सागर बाँध- कोटा, तृतीय चरण में निर्मित।
  जवाहर सागर बाँध, बोरवास गाँव के निकट (कोटा) स्थित है।
- कोटा बैराज- कोटा (केवल सिंचाई हेतु), प्रथम चरण में निर्मित।

12. उत्तर (4)

व्याख्या:-

राजस्थान की प्रमुख बावड़ियाँ

तापी बावड़ी	-जोधपुर
भाड़रेंज बावड़ी	-दौसा
चाँद बावड़ी	-आभानेरी (दौसा)
रानीजी की बावड़ी, गुलाब बावड़ी	-बूँदी
नवलखा बावड़ी	-डूंगरपुर
लाहिनी बावड़ी, दूध बावड़ी	-सिरोही
त्रिमुखी बावड़ी	-उदयपुर
हाड़ी रानी की बावड़ी	-टोडा रायसिंह(टोंक)
नौ मजिला बावड़ी, नीमराणा की बावड़ी	-अलवर
तप्सी की बावड़ी	-बाराँ
पन्ना मीणा की बावड़ी	-जयपुर

13. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक)**- ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भ मार्च से हो जाता है और सूर्य के उत्तरायण में होने के कारण क्रमिक रूप से तापमान में वृद्धि होने लगती है और सम्पूर्ण राजस्थान में उच्च तापमान हो जाता है।
- इस समय चलने वाली **पश्चिमोत्तर हवाएँ** तापमान को और अधिक शुष्क कर देती हैं, क्योंकि ये शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश से आती हैं।

14. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- <u>**प्रमुख समवर्षा रेखाएँ-**</u>

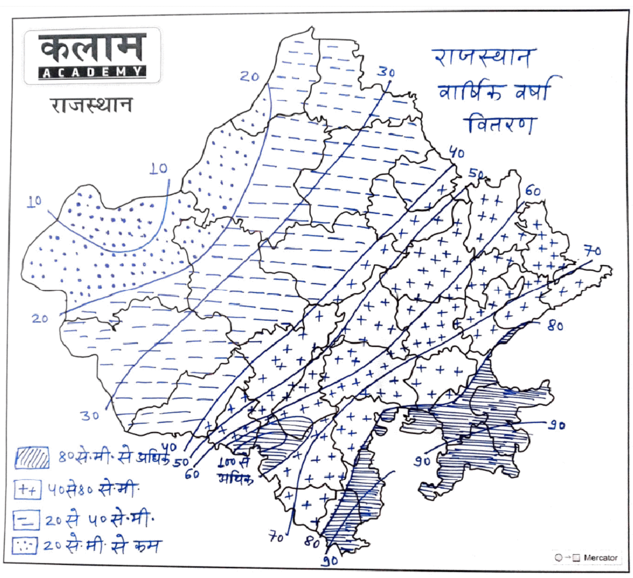

15. उत्तर (4)

व्याख्या:-

कोपेन के जलवायु वर्गीकरण

संकेत	जलवायु प्रदेश	जिले	वनस्पति
Aw	उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, दक्षिणी उदयपुर, दक्षिणी चित्तौड़गढ़, झालावाड़, दक्षिणी बाराँ **प्रतिनिधि जिला- बाँसवाड़ा**	मानसूनी पतझड़ वनस्पति। ये **सवाना तुल्य** घास के मैदानों से साम्यता रखते हैं।
BShw	अर्द्धशुष्क या स्टेपी जलवायु प्रदेश	दक्षिणी जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, पाली, जोधपुर, नागौर, सीकर, चूरू, झुन्झुनूं **प्रतिनिधि जिला- नागौर**	**स्टैपी तुल्य** वनस्पति व काँटेदार झाड़ियाँ।
BWhw	उष्ण कटिबंधीय शुष्क जलवायु	जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू **प्रतिनिधि जिला- बीकानेर**	अधिकांश वनस्पति विहीन क्षेत्र, वर्षा ऋतु में कुछ घास उग जाती हैं।
Cwg	उप-आर्द्र जलवायु प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, जयपुर, दौसा, टोंक, बूँदी, भीलवाड़ा, अजमेर, राजसमंद, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा, बाराँ **सबसे बड़ा जलवायु प्रदेश** **प्रतिनिधि जिला- टोंक**	नीम, बबूल, शीशम, धोकड़ा के पेड़।

16. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- राजस्थान में शुष्क क्षेत्र में फल तथा सब्जियों की कृषि के शोध हेतु 'नेशनल रिसर्च सेन्टर फॉर एरिड हॉर्टीकल्चर' (National Research Centre for Arid Horticulture : NRCAH) की स्थापना बीकानेर में की गई है।
- अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र फल समन्वित अनुसंधान परियोजना के केन्द्र को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार से लाकर बीकानेर में 1993 में स्थानांतरित करके शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र का कार्य वास्तविक रूप में आरंभ हुआ।
- **27 सितंबर** 2000 से इसे संस्थान का दर्जा दिया गया और इसका नाम केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर रखा गया। अक्टूबर 2000 से भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर के गोधरा (गुजरात) स्थित केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र को इसमें विलय कर दिया गया था।
- **केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, पंचमहल (गुजरात)** इसका एक क्षेत्रीय केन्द्र है।

17. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान कृषि सांख्यिकी 2023-24

फसल	सर्वाधिक उत्पादन	प्रमुख किस्में
कपास	गंगानगर, हनुमानगढ़, जोधपुर, नागौर	बीकानेरी नरमा, वीरनार, वराहलक्ष्मी, गंगानगर अगेती
गन्ना	गंगानगर, चित्तौड़गढ़, बूंदी, उदयपुर	को-419, 449, 997, 527, 1007, 1111, को.एस. 767
गेहूं	हनुमानगढ़, गंगानगर, चित्तौड़गढ़, बूंदी	कल्याण, सोना, सोनालिका, मंगला, गंगा, सुनहरी, दुर्गापुरा-65 लाल बहादुर, राज-3077, चम्बल 65, सरबती, कोहिनूर
जौ	गंगानगर, जयपुर, सीकर, भीलवाड़ा	ज्योति, राजकिरण, RD-2035, RD-57, 2052, RDB- 1, R.S.-6, B.L.-2
सरसों	टोंक, अलवर गंगानगर, भरतपुर	पूसा बोल्ड, पूसा कल्याण, रोहिणी, पूसा जय किसान, पीताम्बरी

18. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राज्य के प्रमुख कृषि जलवायु क्षेत्र/विस्तार-

- **अन्त: स्थलीय जलोत्सरण के अन्तवर्ती मैदानी क्षेत्र (II-A)**- नागौर, सीकर, झुन्झुनू, चूरू, डीडवाना-कुचामन
- **अर्द्ध शुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र (III-A)**- जयपुर, अजमेर, दौसा, टोंक, ब्यावर (आंशिक), खैरथल-तिजारा, कोटपुतली-बहरोड
- **बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र (III-B)**- अलवर, धौलपुर, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, डीग
- **अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र (IV-A)**- भीलवाड़ा, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, उदयपुर एवं सिरोही आंशिक

19. उत्तर (1)

व्याख्या:-

बजट 2024-25 की प्रमुख घोषणाएँ-

- **बाराँ में लहसुन उत्कृष्टता केन्द्र** स्थापित करना।
- अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर) में मिनी फूड पार्क तथा साँचोर (जालौर) में एग्रो फूड पार्क की स्थापना करना।
- जैतारण (ब्यावर) व सिरोही में फल सब्जी मंडी तथा बनेठा (टोंक) व मंडार (सिरोही) में गौण कृषि मंडी की स्थापना करना।

कलाम ACADEMY

20. उत्तर (*)

व्याख्या:-

- **प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों का वर्गीकरण-**

1. **आरक्षित वन (Reserved Forest)**- पूर्णत: सरकारी नियंत्रण में, इनमें किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि नहीं की जा सकती है।
2. **संरक्षित या सुरक्षित वन (Protected Forest)**- इसमें लाइसेंस प्राप्त कर पशुचारण व सुखी लकड़िया एकत्रित करने संबंधी कार्य कर सकते हैं।
3. **अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest)**- आरक्षित व संरक्षित के अलावा शेष बचे हुए वनक्षेत्र (इसमें किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है/सरकार को कोई नियंत्रण नहीं)।

वनों के प्रकार	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रतिशत	सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला
आरक्षित वन (Reserved)	12198.71	36.95%	उदयपुर, चित्तौड़गढ़
रक्षित वन (Protected)	18631.13	56.43%	बाराँ, करौली
अर्गीकृत वन (Unclassified)	2184.16	6.62%	बीकानेर, श्रीगंगानगर
कुल वन	33014	100%	उदयपुर, बारॉं

21. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में शीशम के वृक्ष पर्याप्त हैं।
- अर्जुन वृक्ष एक औषधीय वृक्ष है जो राजस्थान के झालावाड़ जिले में भवानी मण्डी क्षेत्र में बहुतायात में पाया जाता है।

22. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान वन विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट-2023 के अनुसार-

- **राजस्थान में न्यूनतम वन क्षेत्र वाले जिले-**
  1. चूरू (79.91 वर्ग किमी.)
  2. हनुमानगढ़ (239 वर्ग किमी.)
  3. नागौर (242 वर्ग किमी.)
  4. जोधपुर (246 वर्ग किमी.)

23. उत्तर (4)

व्याख्या:-

राजस्थान वन नीति-2023 (5 जून 2023) के लक्ष्य-

- सामुदायिक वन प्रबंधन
- वन्य जीव संरक्षण
- वन क्षेत्र में वृद्धि एवं वन संरक्षण आदि

24. उत्तर (3)

व्याख्या:-

एम-सैंड नीति-2024-

- **प्रारम्भ** - 4 दिसम्बर 2024 को।
- **अवधि**- 31 मार्च, 2029 या नई नीति घोषित होने तक।

उद्देश्य-

- रिवर सेण्ड पर निर्भरता को कम करना, उसके विवेकपूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करना तथा नदी पारिस्थितिकी तंत्र के नुकसान को कम करना।
- मौजूदा M- सैण्ड उत्पादन को 20% प्रतिवर्ष की दर से बढ़ाना तथा 2028-29 तक प्रतिवर्ष 30 मिलियन टन उत्पादन को प्राप्त करना।
- निर्माण क्षेत्र के अपशिष्ट का पुनचक्रण (Recyle) कर सही उपयोग करना।
- इस नीति के अन्तर्गत राज्य के राजकीय निर्माण कार्यों में न्यूनतम 25 प्रतिशत एम. सैण्ड का उपयोग अनिवार्य है, जिसे उपलब्धता के आधार पर बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाना प्रस्तावित है।

25. उत्तर (1)

व्याख्या:-

पोटाश खनन क्षेत्र-

- बीकानेर- अर्जुनसर, हनसेरन
- जयपुर- सीतापुरा, लखासर, भारूसारी

रॉक फास्फेट खनन क्षेत्र-

- **उदयपुर**- झामर कोटड़ा, डाकन कोटड़ा, माटोन, ढोल की पाटी, सीसारमा, कानपुर
- **जैसलमेर**- बिरमानिया, लाठी, फतेहगढ़
- **बांसवाड़ा**- सेलोपेट, राम का मुन्ना
- **अलवर**- अड़ुका-अन्दावरी
- **जयपुर**- अचरोल

पाइराइट खनन क्षेत्र-

- सलादीपुरा (सीकर)

टंगस्टन खनन क्षेत्र-

- **नागौर**- डेगाना (देश की सबसे बड़ी खान), भाकरी (रेवत की डूंगरी), बीजाथल, पीपलिया
- **पाली**- पादरला, नाना कराब, सेवरिया
- **सिरोही**- वाल्दा/बलदा, आबू रेवदर, उड़ुवारिया, खेड़ा ऊपरला, देवा का बेरा

कलाम ACADEMY

26. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राजस्थान के एकाधिकार (100%) वाले खनिज

´ सीसा-जस्ता ´ सेलेनाइट ´ वॉलेस्टोनाइट

विभिन्न खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का प्रतिशत अंश

´ जिप्सम (93%) ´ एस्बेस्टोस (89%)

´ घीया पत्थर / सोप स्टोन (85%)

´ रॉक फॉस्फेट (90%) ´ फेल्सपार (70%)

´ केल्साइट (70%) ´ वुल्फ्रेमाइट (50%)

´ तांबा (36%) ´ अभ्रक (22%)

27. उत्तर (3)

व्याख्याः-

लोहा अयस्क

- राजस्थान में सर्वाधिक लौह अयस्क जयपुर व दौसा से उत्पादित किया जाता है।

राजस्थान के प्रमुख लौह अयस्क क्षेत्र

जिला	प्रमुख क्षेत्र
जयपुर	मोरीजा-बानोल, बोमानी, चौमू सामोद क्षेत्र
दौसा	नीमला-रायसेला, लालसोट क्षेत्र
उदयपुर	नाथरा की पाल, थूर-हुण्डेर
सीकर	रामपुरा, डाबला
झुंझुनू	डाबला-सिंघाना, ताओन्दा, काली पहाड़ी
भीलवाड़ा	पुर-बनेड़ा, जहाजपुर, बीगोद
बूंदी	लोहारपुरा, मोहनपुरा
करौली	देदरोली, खोरा, लिलोती, टोडूपुरा

नोट- पादरला, नाना कराब तथा सेवरिया क्षेत्र (पाली) **टंगस्टन** उत्पादन क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है।

28. उत्तर (1)

व्याख्याः-

मरुस्थलीय मृदा के उप-प्रकार	
उप-प्रकार	विस्तार क्षेत्र
बलुई रेतीली	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, झुंझुनूं, चूरू, श्रीगंगानगर
लाल रेतीली	नागौर, पाली, जोधपुर, जालौर, चूरू, झुंझुनूं, फलौदी
पीली-भूरी रेतीली	नागौर, डीडवाना-कुचामन व पाली
खारी व लवणीय मृदा	जैसलमेर, जालौर, बीकानेर, बाड़मेर, बालोत्तरा, नागौर व डीडवाना-कुचामन की निम्न भूमि

29. उत्तर (2)

व्याख्याः-

लाल-लोमी मृदा

- इसे **लैटेराइट या लाल-दोमट मृदा** भी कहते हैं।
- लौह तत्व की अधिकता के कारण इस मिट्टी का रंग लाल दिखाई देता है।
- इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस, चूना व ह्यूमस की कमी पाई जाती है।
- यह मिट्टी कम उपजाऊ है व **मक्का, चावल तथा गन्ने** की फसल के लिए उपयुक्त है।
- **विस्तार क्षेत्र**- डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, दक्षिणी व मध्य उदयपुर तथा दक्षिणी राजसमन्द में मिलती है।

30. उत्तर (4)

व्याख्याः-

मृदा प्रकार	विस्तार क्षेत्र
केल्सी ब्राउन मरुस्थली मृदा	जैसलमेर एवं बीकानेर
ग्रे-ब्राउन जलोढ़ मृदा	जालौर, पाली, नागौर, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, ब्यावर एवं सिरोही
नॉन केल्सिल ब्राउन मृदा	जयपुर, सीकर, झुन्झुनूं, नागौर, अजमेर एवं अलवर

31. उत्तर (3)

व्याख्या:-

राजस्थान मृदा : आधुनिक वैज्ञानिक वर्गीकरण-

- मृदा की उत्पत्ति, रासायनिक संरचना एवं अन्य गुणों के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग **(USDA)** के विश्वव्यापी मृदा वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान में **पाँच प्रकार** की मिट्टी पाई जाती है।

एरिडोसोल-

- **विस्तार**- सीकर, चूरू, झुन्झुनूं, नागौर, पाली, जालौर, जोधपुर
- **जलवायु**- यह शुष्क जलवायु प्रदेश में पाई जाती है।

नोट- यह राज्य में **सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र पर फैली** हुई है।

- एरिडोसोल मृदा की पश्चिमी राजस्थान में प्रधानता है।

एंटीसॉल-

- **विस्तार**- बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, जालौर, पाली, नागौर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, झुन्झुनूं।
- **जलवायु**- यह मृदा शुष्क व अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश में बिखरे हुए रूप में पाई जाती है।
- यह राजस्थान में दूसरी सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई मृदा है।
- यह मृदा भी पश्चिमी राजस्थान के अनेक भागों में विस्तारित है।

अल्फीसॉल-

- **विस्तार**- यह मृदा मुख्यत: **पूर्वी राजस्थान** की ओर पाया जाने वाला मृदा समूह है। (जयपुर, दौसा, अलवर, भरतपुर, डीग, सवाईमाधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, बूँदी, कोटा, बाराँ, झालावाड़)
- **जलवायु**- यह उपार्द्र-आर्द प्रकार की जलवायु में पाई जाती है।

इन्सेप्टिसॉल-

- **विस्तार**- राजसमन्द, पाली, उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, झालावाड़, जयपुर, दौसा, अलवर, सवाईमाधोपुर।
- **जलवायु**- यह मिट्टी अर्द्रशुष्क से आर्द्र जलवायु प्रदेश में पायी जाती है।

वर्टीसॉल-

- **विस्तार**- दक्षिणी-पूर्वी पठार/हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूँदी, बाराँ एवं झालावाड़) में विस्तृत है।
- **जलवायु**- यह मिट्टी आर्द्र से अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश में पायी जाती है।
- यह **काली और चरनोजम मिट्टी** होती है।
- इस मृदा में **क्ले (चीका)** की मात्रा अधिक पायी जाती है।

32. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **खिंचन (फलौदी) कुरजाँ** पक्षियों के प्रवास के कारण पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण केन्द्र बना हुआ है।
- खिंचन एवं मेनार गाँव को पक्षियों के संरक्षण हेतु नवीन रामसर साईट घोषित करने के पश्चात् **राज्य में कुल 4** तथा भारत में कुल 91 रामसर साईट हो गयी है।

राजस्थान के प्रमुख रामसर साईट-

- ♦ केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान – भरतपुर (1981)
- ♦ सांभर झील – जयपुर (1990)
- ♦ खिंचन – फलौदी (जून 2025)
- ♦ मेनार – उदयपुर (जून 2025)

33. उत्तर (2/3)

व्याख्या:-

कंजर्वेशन रिजर्व	अवस्थिति
आसोप –	भीलवाड़ा
अमरख-महादेव लेपर्ड –	उदयपुर
हमीरगढ़ –	भीलवाड़ा
रोटू –	नागौर

34. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **बस्सी अभयारण्य (चित्तौड़गढ़)**- यह अभयारण्य अरावली तथा विन्ध्याचल पर्वतमालाओं के संगम स्थल पर स्थित है, इसे 1988 में अभयारण्य घोषित किया गया। **चौसिंघा, सैण्डग्राउज,** बघेरा, जंगली बिल्ली नामक जीवों और मगरमच्छ यहाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र है।
- बंध बारेठा अभ्यारण्य (भरतपुर)
- मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान (कोटा एवं चित्तौड़गढ़)
- शेरगढ़ अभ्यारण्य (बाराँ)

कलाम ACADEMY

35. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (सवाई माधोपुर)**

  मुख्य जीव- भारतीय बाघ, बघेरे, साँभर, चीतल, नीलगाय, मगरमच्छ तथा रींछ।
- **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर)**

  मुख्य जीव- सफेद सारस (साइबेरियन क्रेन), हँस, शुक, सारिका, चकवा-चकवी, लोह सारस, कोयल तथा राष्ट्रीय पक्षी मोर।

  नोट- यह एशिया में **पक्षियों का सबसे बड़ा प्रजनन क्षेत्र** है।
- **नाहरगढ़ अभयारण्य** (ऐतिहासिक दुर्ग आमेर, नाहरगढ़ व जयगढ़ के चारों ओर जयपुर में विस्तृत)

  मुख्य जीव- लंगूर, सेही, पाटागोह तथा बाघ।
- **बंध-बारेठा अभयारण्य (भरतपुर)**
- **बस्सी अभ्यारण्य (चित्तौड़गढ़)**

  मुख्य जीव- चौसिंघा, सैण्डग्राउज, बघेरा, जंगली बिल्ली, मगरमच्छ आदि।

36. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- **पैराशुटिंग** खिलाड़ी अवनि लेखरा का संबध **जयपुर** जिले से है।
- इन्होंने विभिन्न प्रतिस्पर्द्धाओं में निम्न पदक प्राप्त किए-

प्रतिस्प्रर्द्धा	पदक
पैरिस पैरालम्पिक, 2024	
10 मी. एयर राइफल स्टैंडिंग एस.एच.1 स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-249.7)
टोक्यो पैरालम्पिक, 2020	
(i) 10 मी. एयर राइफल स्टैंडिंग एस.एच.1 स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-249.6)
(ii) 50 मी. राइफल थ्री पॉजीशन एस.एच. स्पर्द्धा	कांस्य
पैराशुटिंग विश्व कप चेतॉरॉक्स (फ्रांस)	
(i) 10 मी. एयर राइफल स्टैंडिंग एस.एच.1 स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-250.6)
(ii) 50 मी. राइफल थ्री पॉजीशन एस.एच. स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-458.3)

- इन्हें निम्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया-

पुरस्कार	वर्ष
पैरालम्पिक खेलों में 'द बेस्ट फीमेल डेब्यू'	2021
मेजर ध्यानचंद खेल रत्न अवार्ड	2021
पद्मश्री	2022

- 2024 में बीबीसी स्पोर्ट्सवुमन ऑफ द ईयर नामित हुई।

37. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- उदयपुर जिले के युग चेलानी स्वीमिंग खेल से संबंधित है।
- ये नेशनल प्रतियोगिता में चार पदक जीतने वाले पहले तैराक बन गये हैं।
- मलेशिया में आयोजित '59वीं इनविटेशनल एज ग्रुप प्रतियोगिता' में युग चेलानी ने कांस्य पदक जीता है।
- कर्नाटक में आयोजित 77वीं सीनियर राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में 2 पदक (एक स्वर्ण एवं एक कांस्य)जीते। युग चेलानी इस प्रतियोगिता में पदक जीतने वाले एकमात्र राजस्थानी खिलाड़ी है।

38. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- राजस्थान के विभिन्न मुख्य सचिवों का कार्यकाल निम्नानुसार है:

(1) भगत सिंह मेहता:	09.05.1958 से 26.09.1964
तथा	16.01.1965 से 29.10.1966
(2) मोहन मुखर्जी:	07.07.1975 से 01.05.1977
तथा	22.06.1977 से 31.10.1977
(3) देवेंद्र भूषण गुप्ता:	30.04.2018 से 03.07.2020
(4) उषा शर्मा:	31.01.2022 से 31.12.2023

39. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- **सुंधा माता मंदिर**- जालौर जिले में सुंधा पर्वत पर सुंधा माता का मंदिर स्थित है। यह चामुंडा माता की प्रतिमा है। यहाँ राजस्थान का पहला रोप वे स्थापित किया गया।

कलाम ACADEMY

40. उत्तर (4)

व्याख्या:-

मंदिर	स्थान
1. ऋषभदेव मंदिर	- धुलैव, उदयपुर
2. सांवलियाजी मंदिर	- मंडफिया, चित्तौड़गढ़
3. द्वारकाधीश मंदिर	- कांकरौली, राजसमंद
4. गौतमेश्वर महादेव मंदिर	- अरनोद, प्रतापगढ़

41. उत्तर (3)

व्याख्या:-

राजस्थान के प्रमुख शहर	उपनाम
जोधपुर	सूर्यनगरी
जालौर	ग्रेनाइट सिटी
चित्तौड़गढ़	राजस्थान का गौरव
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैंड
धौलपुर	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार, रेड डायमंड सिटी
सिरोही	राजस्थान का शिमला
उदयपुर	झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस
जयपुर	पिंकी सिटी, राजस्थान का पेरिस
अजमेर	राजपूताना की कुन्जी
बूँदी	बावड़ियों का शहर

42. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- तिजारा जैन मंदिर जैनधर्म के 8वें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु को समर्पित हैं।

43. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **गलताजी-** जयपुर के इस प्रमुख धार्मिक स्थल के मंदिर, मंडप और पवित्र कुंडों के साथ यहाँ का हरियालीयुक्त प्राकृतिक दृश्य अत्यंत रमणीय है। गलताजी पहाड़ियों के मध्य बना हिन्दू धर्म का पवित्र तीर्थस्थल है। यहाँ पर दीवान कृपाराय द्वारा निर्मित सूर्य मंदिर भी है। यह गालव ऋषि की तपोस्थली है। यहाँ स्थित रामगोपाल मंदिर को स्थानीय लोग बंदर मंदिर भी कहते है। संत कृष्णदास पयहारी ने यहाँ रामानुज सम्प्रदाय की पीठ स्थापित की थी। गलताजी को उत्तरी तोताद्री भी कहा जाता है।

44. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- राजस्थान में निम्नांकित स्थानों पर कृषि अनुसंधान सब स्टेशन स्थित है:-
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, हनुमानगढ़
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, बाड़मेर
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, समदड़ी (पाली)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, वल्लभनगर (उदयपुर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, प्रतापगढ़
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, खानपुर (झालावाड़)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, डिग्गी (टोंक)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, तबीजी (अजमेर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, नागौर
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, अकलेरा (जयपुर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, कोटपुतली (जयपुर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, कुम्हेर (भरतपुर)

45. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- जोधपुर में स्थित केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान:-
- इस संस्थान की स्थापना 1952 में रेत की टीलों के स्थिरीकरण और आश्रय पट्टियों की स्थापना के माध्यम से वायु अपरदन के खतरों को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान कार्य हेतु **मरुस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र (DARS)** के रूप में हुई।
- DARS का 1957 में **मरुस्थलीय वनरोपण एवं मृदा संरक्षण केन्द्र (DASCS)** के रूप में पुनर्गठन किया गया।
- यूनेस्को विशेषज्ञ एवं कॉमनवेल्थ वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान संगठन, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. सी. एस. क्रिशचियन की सलाह पर 1 अक्टूबर 1959 को DASCS का नाम बदलकर **केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)** कर दिया गया।

कलाम ACADEMY

- 1966 में इस संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कर दिया गया।

46. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- बीकानेर में स्थित प्रमुख अनुसंधान केंद्र निम्नलिखित हैं:-
  - ♦ केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान
  - ♦ राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र, जोहड़बीड़
  - ♦ राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र, जोहड़बीड़
  - ♦ बेर अनुसंधान केंद्र
  - ♦ खजूर अनुसंधान केंद्र
  - ♦ कृषि अनुसंधान केंद्र
  - ♦ सिरेमिक विद्युत अनुसंधान एवं विकास केन्द्र
  - ♦ अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्रीय फल समन्वित अनुसंधान परियोजना, बीछवाल

47. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) के अंतर्गत कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) जोन-II का मुख्यालय जोधपुर, राजस्थान में स्थित है।

48. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- राजस्थान का राज्य पुष्प रोहिड़ा का फूल है, जिसका वैज्ञानिक नाम टिकोमेला अनड्यूलेटा है।
- राजस्थान के विभिन्न प्रतीक चिह्न तथा उनके वैज्ञानिक नाम निम्नानुसार हैं:-

	नाम	**वैज्ञानिक नाम**
राज्य पक्षी	गोडावण	ओर्डियोटिस नाइग्रीसैप्स/ कोरियटस नाइग्रीसेप्स
राज्य पशु	**वन्य जीव श्रेणी** चिंकारा	गजेला बन्नेट्टी/ गजेला-गजेला
	पशुधन श्रेणी ऊँट	केमेलस डोमेडेरियस
राज्य वृक्ष	खेजड़ी	प्रोसेपिस सिनेरेरिया
राज्य पुष्प	रोहिड़ा का फूल	टिकोमेला अनड्यूलेटा
राज्य खेल	बास्केटबॉल	
राज्य नृत्य	घूमर	

49. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- जिला कलेक्टर की दंडनायक के रूप में भूमिका निम्नानुसार हैं:
  1. कानून व व्यवस्था बनाए रखना।
  2. जिला पुलिस तंत्र पर नियंत्रण रखना।
  3. साम्प्रदायिक दंगों, उग्र प्रदर्शनों पर नियंत्रण रखना।
  4. विदेशियों के पारपत्र (Visa) की जाँच करना।
  5. जाति, निवास तथा अन्य प्रमाण पत्र जारी करना।
  6. जिला कारागृह/जेल का निरीक्षण करना।
  7. धारा 144 के अंतर्गत शांतिभंग के मामलों की सुनवाई करना।
  8. शस्त्रालयों पर नियत्रंण रखना।
  9. तस्करी, नशीली दवा व्यापार तथा आतंकवादी गतिविधियों पर नियत्रंण रखना।

50. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- वर्तमान में अन्ता विधानसभा क्षेत्र बाराँ से भारतीय जनता पार्टी के विधायक श्री कंवरलाल निरर्हित होने के कारण यह सीट खाली है (23.5.2025 से)

51. उत्तर (2)

व्याख्याः-

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 163 :-

- **अनुच्छेद 163(1)**- राज्यपाल को संविधान में प्रदत्त उसकी विवेकाधीन शक्तियों के अतिरिक्त अन्य कृत्यों में सहायता एवं परामर्श हेतु एक मंत्रिपरिषद् होगी, जिसका प्रधान मुख्यमंत्री होगा।
- **अनुच्छेद 163(3)**- इस बात की न्यायिक जाँच नहीं की जाएगी कि मंत्रिपरिषद् ने राज्यपाल को सलाह दी अथवा नहीं और यदि दी तो क्या दी। अर्थात् मंत्रियों को विधिक उत्तरदायित्व से मुक्त रखा गया है।

कलाम ACADEMY

52. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- राज्यपाल अपने पदीय कर्त्तव्य के लिए किसी भी न्यायालय के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।
- राज्यपाल के विरूद्ध उसकी पदावधि के दौरान किसी भी न्यायालय में दाण्डिक/फौजदारी मामले नहीं लाये जा सकते।
- राज्यपाल की पदावधि के दौरान किसी भी न्यायालय द्वारा उसके विरूद्ध गिरफ्तारी आदेश जारी नहीं किया जा सकता।
- राज्यपाल के विरूद्ध व्यक्तिगत कार्य के संबंध में **दीवानी मामले 2 माह पूर्व सूचना** के आधार पर ही लाये जा सकते हैं, अन्यथा नहीं।

53. उत्तर (2)

व्याख्या:-

उद्योग	अवस्थिति
• J.K लक्ष्मी सीमेंट (J.K) पुरम	पिण्डवाड़ा (सिरोही)
• सल्फ्यूरिक एसिड प्लांट	अलवर
• लाफार्ज सीमेंट	चित्तौड़गढ़
• दी महालक्ष्मी मिल्स	ब्यावर
• सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री	भिवाड़ी (खैरथल-तिजारा)

54. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **DMIC** विकास के लिए राजस्थान में कुल 5 नोड्स का चयन किया गया है-

(i) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराणा (निवेश क्षेत्र)
(ii) जयपुर - दौसा (औद्योगिक क्षेत्र)
(iii) अजमेर - किशनगढ़ (निवेश क्षेत्र)
(iv) राजसमंद - भीलवाड़ा (औद्योगिक क्षेत्र)
(v) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (औद्योगिक क्षेत्र)

55. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- वर्ष 2023-24 में रीको द्वारा विकसित नये औद्योगिक क्षेत्र- नाडोल (पाली), धर्मपुरा (बाड़मेर), उमरिया (झालावाड़) माल की तूस (उदयपुर)।

रीको द्वारा विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों व विशेष निवेश क्षेत्र का विकास

- रीको द्वारा जोधपुर के बोरनाडा में मेड टेक मेडिकल डिवाइसेज पार्क का विकास।
- रीको द्वारा प्रदूषण नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जयपुर जिले के जमवारामगढ़, थौलाई औद्योगिक क्षेत्र में इंटीग्रेटेड रिसोर्स रिकवरी पार्क का विकास।
- RIICO द्वारा बोरानाडा, जोधपुर (क्षेत्रफल में सबसे बड़ा), रणपुर (कोटा), अलवर व उद्योग विहार, श्रीगंगानगर में 04 एग्रो फूड पार्क्स की स्थापना की गई। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र तिंवरी (जोधपुर) में कृषि व खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का विकास।
- रीको द्वारा औद्योगिक क्षेत्र खुशखेड़ा-भिवाड़ी द्वितीय में स्पोर्टस गुड्स एंड टॉयज जोन का विकास।
- अलवर जिले के नीमराणा औद्योगिक एवं घिलोठ औद्योगिक क्षेत्र में जापानी क्षेत्र में स्थापित किए गये।

56. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

- गालटन के अनुसार - संतान केवल माता पिता से नहीं अपितु अपने सभी पूर्वजों से गुणों को प्राप्त करती है।

57. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

- सामाजिक सहभागिता और संचार में कठिनाई सामान्यत: ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) से जुड़ा होता है।

कलाम ACADEMY

58. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

केन्द्रीय विशेषक :- प्रभाव में कम व्यापक किंतु सामान्यीकृत प्रवृत्तियाँ केन्द्रीय विशेषक कहलाती है। इन विशेषकों के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व की विवेचना की जा सकती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व इन्हीं पाँच दस गुणों के भीतर रहता है। यह विशेषक प्राय: लोगों के शंसापत्रों में अथवा नौकरी की संस्तुतियों में लिखे जाते है। उदाहरण – स्फूर्त, निष्कपट, मेहनती आदि।

59. **उत्तर (3)**

व्याख्या:-

- प्रश्नावली (Questionnaire) के माध्यम से व्यक्तित्व को मापा जा सकता है।
- प्रश्नावली में दिए गए उत्तर सत्य तथा गलत दोनों होते हैं।

60. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

- विषय आत्मबोधन परीक्षण/प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण
- यह परीक्षण क्रिस्टीना डी. मार्गन एवं हैनरी मुर्रे द्वारा तैयार किया गया।
- **नायक (Hero):-** कथानक में नायक/नायिका का पता लगाना।
- **प्रेस**– वातावरण में उपस्थित वह बल जिसमें आवश्यकता पूर्ति में मदद मिले अथवा आवश्यकता पूर्ति से वंचित रह जाती हो।
- **थीमा**– आवश्यकता और प्रेस की अंत:क्रिया से उत्पन्न यह व्यक्तित्व के मापन का महत्त्वपूर्ण अंग होता है।

61. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

- गैलन ने हिप्पोक्रेटस की वर्गीकरण विधि को आगे बढ़ाया।

62. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

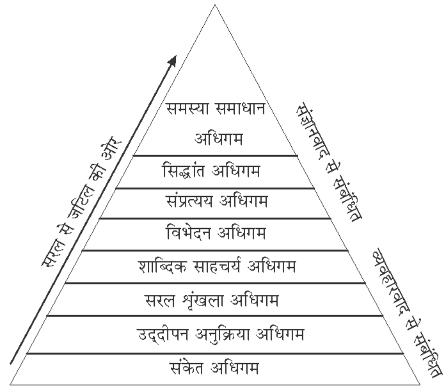

63. **उत्तर (4)**

व्याख्या :

- ब्रूनर, टॉलमैन, लेविन संज्ञानवादी अधिगम से संबंधित विचारक हैं।

64. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

- **दमन :** इस युक्ति में अवांछनीय या अस्वीकार्य विचारों, भावों, यादों को अचेतन में धकेल दिया जाता है क्योंकि इन्हें याद करना कष्टपूर्ण अथवा भय पैदा करने वाला होता है।
- **युक्तिकरण :** युक्तिकरण वह रक्षा युक्ति है जहाँ लोग बहाना बनाते हैं। आपने चालाक लोमड़ी की कहानी सुनी होगी जो असफल होने पर अँगूरों को खट्टा कहने लगती है।
- **प्रक्षेपण :** प्रक्षेपण का अर्थ है दोषारोपण। यह नाच न जाने आँगन टेढ़ा वाली स्थिति है जहाँ व्यक्ति अपनी मनोवृत्ति, इच्छा, भावनाओं को दूसरे के सिर मढ़ देते हैं।
- **विस्थापन :** यह एक प्रकार की रक्षात्मक युक्ति है जहाँ व्यक्ति सांवेगिक प्रतिक्रियाओं को एक व्यक्ति या परिस्थिति से दूसरे व्यक्ति, परिस्थिति या स्थान पर प्रतिस्थापित कर देता है।

65. **उत्तर (3)**

- **युक्तिकरण :** युक्तिकरण वह रक्षा युक्ति है जहाँ लोग बहाना बनाते हैं। आपने चालाक लोमड़ी की कहानी सुनी होगी जो असफल होने पर अँगूरों को खट्टा कहने लगती है।

कलाम ACADEMY

66. **उत्तर (4)**

व्याख्या:-

- अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।
- अधिगम एक प्रक्रिया है ना कि परिणाम।
- अधिगम से तात्पर्य उन परिवर्तनों से है, जो अभ्यास एवं अनुभवों के फलस्वरूप होते हैं।
- परिपक्वता द्वारा उत्पन्न परिवर्तन अधिगम नहीं है क्योंकि परिपक्वता द्वारा शरीर मे केवल जैविक परिवर्तन होते हैं, जबकि अधिगम (सीखना) शारीरिक, मानसिक आदि प्रतिक्रियाओं को विकसित करना है।

67. **उत्तर (2)**

व्याख्या :

आंतरिक अभिप्रेरणा

- इसका स्रोत मनुष्य के भीतर होता है।
- ऐसे अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप से बाहर से देखा नहीं जा सकता।
- यह व्यक्ति को कार्य केन्द्रित रखता है।
- उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर आंतरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण हैं।

68. **उत्तर (4)**

व्याख्या :

- एक अर्जित अभिप्रेरणा जिससे प्रेरित होकर बालक अपने कार्य को इस ढंग से करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता मिल सके, उपलब्धि अभिप्रेरणा कहलाती है।
  वे व्यक्ति जिनमें उच्च उपलब्धि अभिप्रेरण होता है, ऐसे कृत्यों को वरीयता देते हैं जो मध्यम कठिनाई स्तर या चुनौती वाले हो।
  प्रगतिशील परिवारों के बच्चों में यह अपेक्षाकृत अधिक होता है।

69. **उत्तर (3)**

व्याख्या:-

- रुचि – वह अभिप्रेरक शक्ति जो हमारे ध्यान को आकर्षित कर उसे किसी वस्तु, उद्दीपन या कार्य विशेष के संपादन में बराबर बनाये रखकर हमें वांछित उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग प्रदान करती है।

70. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

संकेत परक क्रियाओं का प्रयोग

- पियाजे ने संकेत तथा प्रतीकों को प्राक-संक्रियात्मक चिंतन का महत्वपूर्ण साधन माना है।
- अर्थपूर्ण भाव व्यक्त करने के लिए भाव भंगिमा, चिन्ह, आवाज़ और शब्दों का प्रयोग जैसे अभिवादन के लिए हाथ मिलाना आदि।

71. **उत्तर (4)**

व्याख्या:-

यांत्रिक सापेक्षिक उन्मुखता

(Instrumental Relativist Orientation) :-

- बच्चों की परस्परिकता व सहभागिता अपने फायदे के लिये होती है।
- जैसे को तैसा की प्रवृत्ति (Tit for Tat)
- वह अच्छा कार्य उसे मानता है, जिससे उसे व्यक्तिगत लाभ हो।
- एक बच्चा कोई कार्य इसलिए करता है कि बदले में उसे कुछ प्राप्त हो।

72. **उत्तर (2)**

व्याख्या :

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व है-

- विद्यार्थियों की विकासात्मक विशेषताओं को समझने में
- विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को समझने में
- प्रभाव शिक्षण विधियों को पहचानने में
- पाठ्यचर्चा के निर्माण में

73. **उत्तर (3)**

व्याख्या:-

- शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। वृद्धि और विकास के ज्ञान को अधिगमकर्ता के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

कलाम ACADEMY

74. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

- नव व्यवहारवादी अमेरीकी मनोविज्ञानिक एडविन रे गुथरी ने पावलव के शास्त्रीय अनूबंधन से आगे बढ़कर अपने विचार सामयिक 'सामीप्यता' (Temporal Contigutiy) का प्रतिपादन किया।

75. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

- **परिवर्त्य समयान्तर अनुसूची (Variable Interval) :** पुनर्बलन प्रदान करने में निश्चित समयावधि का ध्यान ना रखा जाए।

76. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

- **आंशिक क्रिया का नियम (Law of Partial Activity) :** अधिगम की प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति संपूर्ण स्थिति नहीं बल्कि उसमें एक अंश अथवा पक्ष में प्रति अनुक्रिया करता है। इस प्रकार कार्य को विभाजित कर अधिगम प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाता है।

उदाहरण :

किसी विषय की पढ़ाई के दौरान छात्र अपनी विषय वस्तु को छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित करके ही पढ़ते हैं।

77. **उत्तर (2)**

व्याख्या :

- जन्म के समय दाँत नहीं होते हैं हालांकि दाँतों का निर्माण गर्भावस्था में हो जाता है।

78. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

- विकास एकीकृत रूप में होता है अर्थात् बालक पहले अपने संपूर्ण अंग को फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है इसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। (Integration)
- विकास एक सतत व निरंतर प्रक्रिया है। इसकी गति कम या ज्यादा हो सकती है। (Continuous Process)
- विकास पूर्वानुमेय होता है अर्थात् इसकी भविष्यवाणी की जा सकती है। (Predictable in Nature)

79. **उत्तर (4)**

व्याख्या:-

80. **उत्तर (1)**

व्याख्या:-

प्राचीन अनुबंधन की प्रक्रिया			
अनुबंधन से पूर्व :	घंटी (CS: अनुबंधित उद्दीपक)	⟶	कोई अनुक्रिया नहीं
	भोजन (US: स्वाभाविक उद्दीपक)	⟶	लार (स्वाभाविक अनुक्रिया)
अनुबंधन के समय :	CS+US (घंटी) + (भोजन)	⟶	UR (लार)
अनुबंधन के पश्चात् :	घंटी (CS)	⟶	लार (CR)

US = Unconditioned Stimulus

UR = Unconditioned Response

CS = Conditioned Stimulus

CR = Conditioned Response

81. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-

- प्रश्नानुसार विकल्प 1, 3 व 4 पूर्णतया सत्य हैं। वहीं विकल्प-2 असत्य है, क्योंकि 'गोगाजी रा रसावला' नामक रचना बिठू मेहा की है, जसदान बिठू की रचना 'वीर मेहा प्रकाश' है।

82. **उत्तर (3)**

व्याख्या:-

- रघुराज सिंह हाड़ा का जन्म झालावाड़ जिले के चमलासा गाँव में हुआ।
- यह हाड़ौती अंचल के प्रमुख गीताकार हुए।
- **प्रमुख गीत :** घुघरा, अण बाँच्या आखर, हरदोल, आमल खीवरा, फूल केसुला फूल आदि।

कलम ACADEMY

83. उत्तर (2)

व्याख्या:-

ख्यात-

- ख्यातें हमें राजस्थानी भाषा में लिखित गद्य साहित्य के रूप में मिलती है।
- ख्यातों से तत्कालीन समाज की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन होता है।
- ख्यात वंशावली तथा प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रूप है। ख्यातों में राजवंश की पीढ़ियाँ, जन्म मरण की तिथियाँ, किन्हीं विशेष घटनाओं का उल्लेख तथा जिस वंश के लिए ख्यात लिखी गई हो उसके व्यक्ति विशेष के जीवन संबंधी विवरण रहता है।
- ख्यातों का नामकरण वंश, राज्य या लेखक के नाम से किया जाता था। जैसे- राठौड़ाँ री ख्यात, मारवाड़ राज्य रा ख्यात, नैणसी की ख्यात आदि।
- ख्यातों का विस्तृत रूप 16वीं शताब्दी के अन्त से बनना आरम्भ हुआ तो इससे पहले का वर्णन कल्पना के आधार पर दिया गया। अर्थात् 16वीं शताब्दी के पूर्व का वर्णन जो इन ख्यातों से उपलब्ध होता है अधिकांश में कपोल कल्पित ही है।

84. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- राजावाटी व तोरावाटी ढूंढाड़ी की उपबोलियाँ हैं एवं सोंधवाड़ी मालवी भाषा की उपबोली है तथा अहीरवाटी मेवाती की उपबोली है।

85. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- 2 से 7 जुलाई तक चीन में आयोजित एशिया कप वुशु प्रतियोगिता में राजस्थान की महक शर्मा ने 75 किग्रा. भार वर्ग में रजत पदक जीता।

86. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **राजस्थानी** भाषा के लिए **साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार- 2025 पुनम चन्द गोदारा** (1992) को उनकी पुस्तक **"अंतस रै आगणै (कविता)"** के लिए प्रदान किया गया।
- पुरस्कार:- ताम्र पट्टिका व 50 हजार रूपये

87. उत्तर (3)

व्याख्या:-

राज उपचार ऐप-

- हाल ही में राजस्थान सरकार ने प्रदेशवासियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु राज उपचार ऐप लॉन्च किया है।
- इस ऐप के माध्यम से मरीज चिकित्सकीय परामर्श हेतु ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं।

88. उत्तर (3)

व्याख्या:-

धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान-

- 15 जून से 15 जुलाई 2025 तक पूरे भारत के 549 जिलों के 63000 से अधिक जनजातीय बहुल गांवों में एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया गया।
- **उद्देश्य:** जागरूकता, पहुंच तथा सशक्तिकरण के माध्यम से जनजातीय समुदायों को सशक्त बनाना तथा सरकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीण जनजाति परिवारों तक पहुँचाना।
- राजस्थान में राज्यस्तरीय इस अभियान की शुरूआत जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी द्वारा **उदयपुर जिले** के **कोटड़ा ब्लॉक** से की गई।
- राजस्थान राज्य में यह अभियान 37 जिलों के 207 विकास खंडों के 6019 ग्रामों में संचालित किया गया।

89. उत्तर (3)

व्याख्या:-

(राजस्थान सरकार के फ्लैगशिप योजना/कार्यक्रम)	(सम्बन्धित विभाग)
• स्वामित्व योजना –	पंचायती राज विभाग
• मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना –	स्वायत शासन विभाग
• अमृत योजना –	जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग
• अटल ज्ञान केन्द्र –	पंचायती राज विभाग

कलाम ACADEMY

90. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- जुलाई, 2025 में राज्य की सहकारी समितियों के उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाने के लिए राजस्थान राज्य सहकारी क्रय विक्रय संघ लिमिटेड व राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड के मध्य MoU हस्ताक्षरित किया गया।

91. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- विषुवत् वृत्त की लम्बाई पृथ्वी की परिधि के बराबर होती है।
- **विषुवत रेखा/विषुवत वृत :** दोनों ध्रुवों से समान दूरी पर स्थित पृथ्वी को दो समान भागों उत्तरी व दक्षिणी गोलार्द्ध में विभक्त करने वाली रेखा को विषुवत रेखा (0^oअक्षांश) कहा जाता है। अक्षांशों को अंश में मापा जाता है, विषुवत वृत्त शून्य अंश अक्षांश को दर्शाता है।
- भूमध्य रेखा के दोनों तरफ 1^o-1^o के अन्तराल पर क्रमश: 90^o उत्तर में एवं 90^o दक्षिण में अक्षांश बनते हैं। अत: उत्तर-दक्षिण में विभाजन की दृष्टि से 180 अक्षांश होते हैं तथा विषुवत रेखा (0^o अक्षांश) सहित इनकी संख्या 181 होती है परन्तु 90^o उत्तरी एवं 90^o दक्षिणी अक्षांशों का निर्माण वृत्त के बजाय बिन्दु के रूप में होता है। इसलिए भूमध्य रेखा सहित अक्षांश वृत्तों की कुल संख्या 179 होती है।

- ध्रुवों की ओर चलने पर अक्षांश वृत्तों की लम्बाई क्रमश: घटती जाती है। भूमध्य रेखा या 0^o अक्षांश वृत्त की लम्बाई सर्वाधिक (पृथ्वी की परिधि के बराबर) होती है जबकि शेष अक्षांश वृत्तों की लम्बाई कम होती जाती है एवं दोनों ध्रुव बिन्दु के रूप में बनते हैं।

92. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- समय का अंतर = 3 घंटे (08:00AM - 05:00 AM)

  पृथ्वी 24 घंटे में घूमती है = 360^0

  अत: 1 घंटे में पृथ्वी घूमेगी = $\frac{360}{24} = 15^0$

  अत: 3 घंटे में पृथ्वी घूमेगी = $15^0 \times 3 = 45^0$ **देशांतर**

  चूकि दोनों स्थानों के मध्य 45^0 देशांतरों का अंतर होगा तथापि समय 08 : 00 AM का दे रखा है इसलिए 72^0 पूर्वी देशांतर से 45^0 देशांतर पूर्व की ओर बढ़ाना होगा।

  72^0 पूर्वी देशांतर + 45^0 देशांतर = 117^0 पूर्वी देशांतर

93. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- पृथ्वी की **परिक्रमण गति एवं अक्षीय झुकाव** के कारण पृथ्वी पर ऋतुएँ बनने एवं दिन-रात के छोटे-बड़े होने की क्रिया होती है। यदि पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी नहीं होती एवं केवल परिक्रमण गति ही होती तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर हमेशा दिन-रात बराबर होते (12 घण्टे का दिन और 12 घण्टे की रात) एवं ऋतुएँ भी नहीं बनती।

  नोट- ऋतुओं में परिवर्तन सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की स्थिति में परिवर्तन के कारण होता है।

94. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- पृथ्वी की **घूर्णन गति** के कारण केन्द्रापसारी बल (अपकेन्द्रीय बल) लगता है जिससे **भूमध्यरेखीय क्षेत्र** में अधिक **उभार एवं ध्रुवों पर चपटापन** पैदा हुआ है। इसी के कारण ही पृथ्वी का भूमध्यरेखीय व्यास अधिक एवं ध्रुवीय व्यास कम होता है एवं इस चपटेपन के कारण ही ध्रुवों के निकट अक्षांशों के बीच की दूरी थोड़ी सी अधिक मिलती है।

- **पृथ्वी की घूर्णन गति** के कारण ही **विक्षेप बल या कोरियालिस बल** उत्पन्न होता है जिससे हवाएं व धारायें **उत्तरी गोलार्द्ध में दायीं तरफ व दक्षिणी गोलार्द्ध में बायीं तरफ** मुड़ जाती हैं।

कलाम ACADEMY

95. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **कार्बन-डाई ऑक्साइड (CO_2):-** वायुमण्डल में कार्बन-डाई ऑक्साइड की अधिकांश सान्द्रता 20 किमी. की ऊँचाई तक पायी जाती है तथा अल्प मात्रा में 90 किमी. की ऊँचाई तक पायी जाती है।
- यह एक भारी व परिवर्तनशील गैस है।
- यह ग्रीन हाउस गैसों की श्रेणी में आती है जो सौर विकिरण को धरातल पर आने तो देती है, परन्तु पार्थिव विकिरण की जो मात्रा अन्तरिक्ष की ओर जाती है उसमें से कुछ मात्रा का अवशोषण कर लेती है। जिससे पृथ्वी पर औसत तापमान 15° सेल्सियस बना रहता है। यदि वायुमण्डल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड नहीं हो तो सम्पूर्ण पार्थिव विकिरण अन्तरिक्ष में चला जायेगा तथा पृथ्वी पर औसत तापमान –20° सेल्सियस हो जायेगा जिसमें जीवन संभव नहीं है।
- ग्लोबल वार्मिंग हेतु 60% योगदान कार्बनडाईऑक्साइड का है।
- **अन्य ग्रीन हाउस गैसें:-** नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), मीथेन (CH_4) , ओजोन (O_3), क्लोरो फ्लोरो कार्बन (CFC) तथा जलवाष्प।

96. उत्तर (2)

व्याख्या:-

समताप मण्डल (Stratosphere):-

- यह क्षोभमण्डल के ऊपर पृथ्वी की सतह से 50 km की ऊँचाई तक पायी जाती है।
- इसकी मोटाई भूमध्य रेखीय क्षेत्रों पर कम तथा ध्रुवीय क्षेत्रों पर अधिक होती है।
- इस परत में मौसम संबंधी कोई भी परिवर्तन नहीं होते है अत: यह वायुयानो की उड़ानों के लिए सर्वाधिक सुरक्षित है।
- इस परत में कुछ रंग-बिरंगे बादल पाये जाते है जिन्हें नेक्रियस क्लाउड या **मुक्ता मेघ (Pearl Cloud)** कहा जाता है। इस परत को **मुक्ता मेघों की जननी (Mother of Pearl Cloud)** भी कहा जाता है।

97. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **क्षोभमण्डल** में सम्पूर्ण वायुमण्डलीय द्रव्यमान का 75% पाया जाता है तथा कुल जलवाष्प का 99% से अधिक पाया जाता है।
- अधिकांश एयरोसोल भी इसी परत में पाये जाते है इसलिए सभी मौसमी घटनाएँ जैसे:- कोहरा, बादल, वर्षा, हिमपात आदि क्षोभमण्डल में ही घटित होते है। अत: इसे मौसमी परिवर्तनों का मण्डल भी कहा जाता है।
- **क्षोभ सीमा (Tropopause):-** क्षोभमण्डल के ऊपर जहाँ तापमान की गिरावट रूक जाती है वहाँ लगभग 1.5 km मोटी एक संक्रमण परत क्षोभमण्डल को समतापमण्डल से अलग करती है जिसे क्षोभ सीमा कहा जाता है।
- क्षोभमण्डल में ऊर्ध्वाधर दिशा में तापमान समान रहता है। सभी मौसमी घटनाएँ क्षोभसीमा के नीचे ही सम्पन्न होती है। इसलिए इसे **मौसमी परिवर्तनों की छत** कहा जाता है।

98. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **तापजन्य वायुदाब पेटियाँ:-**
  (i) विषुवतरेखीय निम्न दाब पेटी
  (ii) उत्तरी ध्रुवीय उच्च दाब पेटी
  (iii) दक्षिणी ध्रुवीय उच्च दाब पेटी
- **गतिजन्य वायुदाब पेटियाँ:-**
  (i) उत्तरी उपोष्ण उच्च दाब पेटी
  (ii) दक्षिणी उपोष्ण उच्च दाब पेटी
  (iii) उत्तरी उपध्रुवीय निम्न दाब पेटी
  (iv) दक्षिणी उपध्रुवीय निम्न दाब पेटी

कलाम ACADEMY

99. उत्तर (3)

व्याख्या:-

पछुआ पवनें/पश्चिमी पवनें/वेस्टरलीज पवनें-

- ये दोनों गोलार्द्धों में उपोष्ण उच्च वायुदाब पेटियों से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटियों की ओर चलती है।
- ये पवनें दोनों गोलार्द्धों में 30° – 35° अक्षांश से 60° – 65° अक्षांश के बीच चलती है। इन पवनों की सीमा मौसम के अनुसार परिवर्तित होती रहती है तथा ध्रुवों की ओर इनकी सीमा अधिक अस्थिर होती है।
- ये व्यापारिक पवनों की दिशा के ठीक विपरीत दिशा में चलती हैं अर्थात् उत्तरी गोलार्द्ध में इनकी दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर एवं दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर होती है।
- उत्तरी गोलार्द्ध से स्थल की अधिकता है, इसलिए घर्षण बल अधिक प्रभावी होता है। जबकि दक्षिणी गोलार्द्ध में जलीय भाग की अधिकता के कारण घर्षण का प्रभाव कम होता है, इसलिए दक्षिणी गोलार्द्ध की पछुआ पवनों की गति अधिक हो जाती है। जिन्हें-

  40° दक्षिणी अक्षांश पर गरजती चालीसा (Roaring forties)

  50° दक्षिणी अक्षांश पर भयंकर/प्रचण्ड पचासा (Furious fifties)

  60° दक्षिणी अक्षांश पर चीखता साठ (Shrieking sixties) कहा जाता है।
- इन पवनों के साथ चक्रवात व प्रतिचक्रवात भी पश्चिम से पूर्व दिशा में चलते हैं।
- व्यापारिक पवनों की तुलना में पछुआ पवनें अधिक प्रचण्ड होती हैं।

100. उत्तर (4)

व्याख्या:-

उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात के विभिन्न क्षेत्रों में उपनाम -

1. संयुक्त राज्य अमेरिका में	-	हरिकेन
2. चीन व जापान में	-	टायफून
3. पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में	-	विलीविलिज
4. भारत/हिंद महासागर में	-	साइक्लोन/चक्रवात

101. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **जोण्डा**- दक्षिण अमेरिका के एण्डीज पर्वतो के पूर्वी ढ़ालों पर चलने वाली गर्म व शुष्क चिनूक के समान प्रकृति की हवा।
- **हरमट्टन**- यह अफ्रीका के सहारा मरुस्थल से दक्षिण-पश्चिम की ओर चलने वाली गर्म व शुष्क हवा है, जो पश्चिमी अफ्रीका के गिनी के तट तक पहुँचती है। इसे डॉक्टर हवा भी कहा जाता है।
- ऐसी प्रकृति की हवा विश्व के विभिन्न भागों में निम्न नामों से जानी जाती है-

ऑस्ट्रेलिया-	ब्रिक फिल्डर
न्यूजीलैण्ड-	नार्वेस्टर
USA -	ब्लेक रोलर
अरब के मरुस्थल में-	शामल

- **बोरा**- इटली व एड्रियाटिक सागर के तट पर चलने वाली ठण्डी हवा।
- **पम्पेरो**- दक्षिण अमेरिका के अर्जेन्टीना के पम्पास मैदानों में चलने वाली ठण्डी हवा।

102. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **RUDA द्वारा भौगोलिक संकेतक पंजीयन (G.I.पंजीयन) में सम्मिलित उत्पाद -**
  - ब्लू पोटरी
  - पोकरण पोटरी
  - कोटा डोरिया
  - सांगानेरी व बगरू हैड ब्लॉक प्रिंट

कलाम ACADEMY

103. उत्तर (4)

व्याख्या:-

एकीकृत वस्त्र पार्क योजना

- भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की प्रमुख योजना Scheme of Integrated Textile Park (STTP) का संचालन राजस्थान में किया जा रहा है।
- वर्तमान में राज्य में इस योजना के अंतर्गत चार टेक्सटाइल पार्क कार्यरत है। जो निम्न है-

पार्क	स्थान
• जयपुर इन्टीग्रेटेड टेक्सक्राफ्ट पार्क	बगरू, जयपुर
• जयपुर टेक्स विविंग पार्क	किशनगढ़, अजमेर
• किशनगढ़ हाईटैक टेक्स पार्क	किशनगढ़, अजमेर
• नेक्स्ट जेन टेक्सटाइल पार्क	पाली

104. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **राजस्थान स्थित प्रमुख एग्रो फूड पार्क-**
  1. रणपुर, कोटा
  2. बोरानाडा, जोधपुर (क्षेत्रफल में सबसे बड़ा)
  3. उद्योग विहार, श्रीगंगानगर
  4. अलवर
- अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर) में **मिनी फूड पार्क** तथा साँचोर (जालौर) में **एग्रो फूड पार्क** की स्थापना करना (बजट 2024-25 की प्रमुख घोषणा)।

105. उत्तर (2)

व्याख्या:-

महासागरीय-धारा	प्रकृति	स्थिति
• गल्फस्ट्रीम	गर्म	उत्तरी अटलाण्टिक
• केनारी	ठण्डी	उत्तरी अटलाण्टिक
• अलनीनो	गर्म	दक्षिणी प्रशान्त महासागर
• सुशिमा	गर्म	उत्तरी प्रशान्त महासागर

106. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- विभिन्न महासागरीय धाराओं का पश्चिम से पूर्व की ओर व्यवस्थित क्रम -**कैलिफोर्निया - लैब्रोडोर - अगुलहास - क्यूरोशिवो**

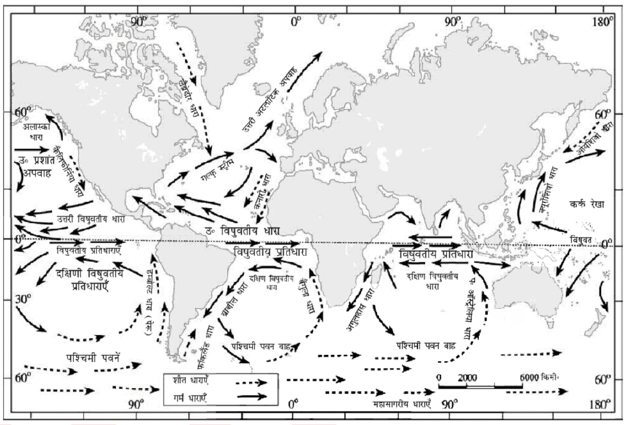

107. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **महासागरीय धाराओं की दिशा परिवर्तन हेतु उत्तरदायी कारक**

  (i) तट की दिशा व आकार (आकृति)

  (ii) महासागरीय तली की स्थालाकृतियाँ

  (iii) पवनों का मौसमी परिवर्तन

  (iv) पृथ्वी का परिभ्रमण (कोरियालिस बल)

108. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **अपसौर ज्वार (Aphelian Tide)** :- जब पृथ्वी सूर्य से सबसे दूर (15.2 करोड़ किमी.) होती है, अपसौर की स्थिति कहलाती है। यह स्थिति प्रत्येक वर्ष 4 जुलाई को होती है। इस स्थिति में ज्वार तल सामान्य से नीचा रहता है।
- **उपसौर ज्वार (Perihelian Tide)** :- जब पृथ्वी सूर्य के निकटतम (14.7 करोड़ किमी.) होती है, उपसौर की स्थिति कहलाती है यह स्थिति प्रत्येक वर्ष 3 जनवरी को होती है। इस स्थिति में ज्वार तल सामान्य से ऊँचा रहता है।
- सूर्य व पृथ्वी के मध्य औसत दूरी 15 करोड़ किमी. है।

109. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **अप-भू ज्वार (Apogee Tide) (भूमि उच्च ज्वार) :-** जब पृथ्वी व चन्द्रमा के मध्य दूरी दीर्घवृत्ताकार कक्षा के कारण अधिकतम (4,07,000 किमी.) हो तो यह स्थिति अपभू कहलाती है इसमें सामान्य ज्वार की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम ऊँचा ज्वार आता है।
- **उपभू ज्वार (Perigee Tide) (भूमि नीच ज्वार):-** जब पृथ्वी व चंद्रमा के मध्यदूरी न्यूनतम (3,56,000 किमी.) हो तो यह स्थिति उप-भू कहलाती है। इस स्थिति में सामान्य ज्वार की अपेक्षा 20 प्रतिशत अधिक ऊँचा ज्वार आता है।
- पृथ्वी व चन्द्रमा के मध्य औसत दूरी 3, 84, 000 किमी. है।

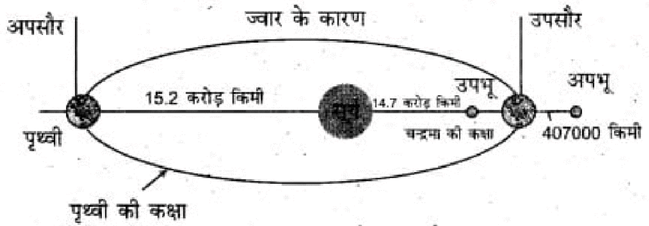

110. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- पृथ्वी पर सात महाद्वीप है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के महाद्वीपों का व्यवस्थित **अवरोही क्रम-**

1. एशिया	**2. अफ्रीका**
3. उत्तरी अमेरिका	**4. दक्षिणी अमेरिका**
5. अण्टार्कटिका	**6. यूरोप**
7. ऑस्ट्रेलिया	

- अत: प्रश्नानुसार क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के महाद्वीपों का व्यवस्थित आरोही क्रम - **यूरोप, अण्टार्कटिका, दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी अमेरिका**

111. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **दैनिक ज्वार :-** किसी स्थान पर 24 घण्टे में एक बार ही उच्च ज्वार आता है तो उसे दैनिक ज्वार कहते हैं।
- **किसी स्थान पर दैनिक ज्वार/प्रत्यक्ष ज्वार :-** 24 घण्टे 52 मिनट में आता है (52 मिनट का विलम्ब)
- किसी स्थान पर अर्द्ध-दैनिक ज्वार आता है- 12 घण्टे 26 मिनट (विलम्ब 26 मिनट)
- किसी स्थान पर प्रत्यक्ष के बाद अप्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष के बाद प्रत्यक्ष ज्वार आता है- 12 घण्टे 26 मिनट (विलम्ब 26 मिनट)
- किसी स्थान पर उच्च ज्वार (प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष) के बाद निम्न ज्वार (भाटा) आता है- 6 घण्टे 13 मिनट बाद (विलम्ब 13 मिनट)

112. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- वेनेजुएला में ओरिनिको नदी बहती है। इसकी सहायक नदी रियोकैरोनी है। रियोकैरोनी पर **एंजिल जल प्रपात (वेनेजुएला)** स्थित है यह 979 मीटर ऊँचा है। यह विश्व का सबसे ऊँचा जलप्रपात है।

113. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- मेरियाना - उत्तरी - पश्चिमी प्रशांत महासागर
- प्यूर्टोरिको - उत्तरी अंटलाटिक महासागर
- सुण्डा - हिन्द महासागर
- चैलेंजर - अण्टलाटिक महासागर
- अटलांटिक महासागर के मध्य भाग में लगभग 14800 KM की लम्बाई में अंग्रेजी वर्णमाला के S अक्षर जैसी आकृति में एक कटक फैला हुआ है। उत्तर में आइसलैण्ड द्वीप से लेकर दक्षिण में बोवेट द्वीप तक है। यह विश्व का सर्वाधिक लम्बा एवं सर्वाधिक विकसित कटक है। इसके उत्तरी भाग को डॉल्फिन व दक्षिणी भाग को चैलेंजर कटक कहा जाता है।

114. उत्तर (4)

व्याख्याः-

डेयरी/वाणिज्यिक दुग्ध उत्पादन कृषि -

- यह कृषि प्रणाली विश्व के ठण्डे प्रदेशों में जैसे- उत्तरी पश्चिमी यूरोप (नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, नीदरलैण्ड, ब्रिटेन, आयरलैण्ड), कनाडा, उत्तरी-पूर्वी, USA, दक्षिणी-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड आदि देशों में शुरू की गई थी जिसमें बड़े पैमाने पर दुधारू पशुओं के रूप में गायों का पालन किया जाता है।
- यह स्थायी चारागाहों के उपयोग पर आधारित शीतोष्ण कटिबंध क्षेत्र की प्रमुख आर्थिक क्रिया है।
- ठण्डे प्रदेशों में डेयरी कृषि के विकास का प्रमुख कारण जलवायु है, परन्तु वर्तमान में अधिक माँग वाले या सघन जनसंख्या वाले प्रतिकूल जलवायु वाले भागों में भी तापमान की कृत्रिम दशाओं का विकास करते हुए यह कृषि प्रणाली विकसित की जा रही है।

नोटः दक्षिणी पूर्वी एशिया चावल प्रधान निर्वाह कृषि हेतु प्रसिद्ध हैं।

115. उत्तर (4)

व्याख्याः-

भूमध्य सागरीय कृषि-

- यह कृषि 30° से 40° अक्षांशों के बीच महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में भूमध्य सागरीय जलवायु वाले क्षेत्रों में की जाती है।
- इसका विस्तार भूमध्यसागर के समीपवर्ती क्षेत्र जो **दक्षिणी यूरोप से उत्तरी अफ्रीका में ट्यूनीशिया से एटलांटिक तट तक फैला है दक्षिणी कैलिफोर्निया (संता-आना नदी बेसिन), मध्यवर्ती चिली, दक्षिणी अफ्रीका का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण व दक्षिण पश्चिम भाग** में है।
- इस कृषि में संतरा, अंगूर (मुनका, किशमिश), जैतून, नींबू, अंजीर आदि का उत्पादन किया जाता है।
- भूमध्यसागरीय कृषि में निर्वाहक तथा वाणिज्यिक दोनों प्रकार की फसलों का उत्पादन है।
- खट्टे फलों के उत्पादन के कारण इस कृषि प्रदेश में शराब उद्योग का विकास हुआ है। (शराब उद्योग का हृदय)

बागाती/बागानी/रोपण कृषि -

- **ब्राजील** में अभी भी कुछ **कॉफी (कहवा) के बागान** जिन्हें **फेजेंडा** कहा जाता है, यूरोपवासियों के नियंत्रण में है।

नोट- विश्व में ब्राजील कॉफी का अग्रणी देश है।

- पटसन **'सुनहरा रेशा'** के रूप में जाना जाता है तथा भारत व बांग्लादेश इसके अग्रणी उत्पादक देश हैं।

स्थानान्तरी/आदिम कृषि -

- म्यांमार में स्थानांतरित कृषि को **टाँग्या (तुंग्या)** कहते है।
- मेक्सिको तथा मध्य अमेरिका में स्थानांतरित कृषि को **मिल्पा** के नाम से जाना जाता है।

116. उत्तर (3)

व्याख्याः-

व्यापारिक/विस्तृत वाणिज्यिक खाद्यान कृषि-

- यह कृषि कम जनसंख्या वाले व कम जनसंख्या घनत्व वाले शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदानों (मध्य अक्षांशों के आंतरिक भागों में) में की जाती है जहाँ अर्द्ध-शुष्क जलवायु पायी जाती है।
- इसके अंतर्गत USA व कनाडा के **प्रेयरी मैदान**, रूस/यूरेशिया के **स्टेपी मैदान**, अर्जेन्टीना के **पम्पास मैदान**, दक्षिण अफ्रीका के **वेल्ड**, ऑस्ट्रेलिया के **डाउन्स व मर्रे डार्लिंग नदी बेसिन** तथा न्यूजीलैण्ड के **केन्टरबरी** आदि आते है।

विशेषताएँः-

(i) इन कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में कृषि भूमि की उपलब्धता अधिक है जिसके कारण कृषि जोत का आकार बड़ा है अर्थात् प्रति व्यक्ति भूमि अधिक पायी जाती है।

कलाम ACADEMY

(ii) इसकी मुख्य फसलें गेहूँ है। यद्यपि अन्य फसलें जैसे मक्का, जौ, राई एवं जई भी बोयी जाती है।

(iii) यहाँ खेतों को जोतने से फसल काटने तक सभी कार्य मानवीय श्रम की बजाय मशीनों से किये जाते हैं। (मशीनों पर व्यय अधिक) इसलिए इसे **मशीनी संस्कृति** भी कहा जाता है।

(iv) यह कृषि की महंगी प्रणाली है, परन्तु इसमें सिंचाई, उर्वरक आदि पर निवेश कम किया जाता है अर्थात् प्रति इकाई अधिक उत्पादन के लिए गहनता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। अतः बड़े पैमाने पर की जाने वाली विस्तृत कृषि का प्रकार है।

(v) इसमें कुल उत्पादन अधिक होता है परन्तु प्रति हेक्टेयर (एकड़) उत्पादन कम होता है। जनसंख्या कम होने के कारण प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक मिलता है।

(vi) इसमें वाणिज्यीकरण का स्तर अत्यधिक उच्च होता है।

(vii) फसलों में विविधता की बजाय विशेषीकरण पाया जाता है अर्थात् किसी एक फसल की कृषि की जाती है।

117. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- कृषि पद्धतियों के वर्गीकरण तथा सीमांकन का प्रथम वैज्ञानिक प्रयास **1936 में ह्विटलसी** ने 'Major Agricultural Regions of The Earth' लेख में किया था।
- ह्विटलसी ने कृषि प्रकारों के निर्धारण हेतु निम्न **5 आधार** बनाये है:-

  (i) फसल व पशु संयोजन।

  (ii) निवेश की मात्रा (संगठनात्मक कारक जैसे:- पूँजी, श्रम, सिंचाई, उर्वरक)

  (iii) फसल तथा पशुपालन उत्पादन की प्राविधिकी/तकनीकी

  (iv) उपभोग का ढ़ग (जैसे:- निर्वाह/व्यापारिक)

  (v) कृषि में आवास व्यवस्था।
- उपरोक्त 5 आधारों पर ह्विटलसी द्वारा विश्व में कृषि के **13 प्रकार** बताये गये है।

(1) स्थानान्तरी कृषि

(2) प्रारम्भिक स्थायी कृषि

(3) चलवासी पशुचारण

(4) व्यापारिक पशुपालन

(5) मिश्रित कृषि (निर्वाह पशुपालन व फसल उत्पादन कृषि)

(6) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि

(7) चावल विहीन गहन निर्वाह कृषि

(8) व्यापारिक खाद्यान्न कृषि

(9) व्यापारिक पशुपालन व फसल कृषि

(10) भूमध्य सागरीय कृषि

(11) बागाती/बागानी/रोपण कृषि

(12) विशिष्ट बागवानी कृषि

(13) व्यापारिक दुग्ध पशुपालन कृषि/ डेयरी कृषि

118. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **मेडागास्कर**- अफ्रीका के पूर्व में स्थित हिंद महासागर का सबसे बड़ा द्वीप
- सेशेल्स, रीयूनियन, जंजीबार (लोंग का द्वीप), सोकोत्रा- पश्चिमी हिन्द महासागर में अफ्रीका के पूर्वी तट के निकट।
- **चेगोस + डियागो गार्सिया द्वीप**- मध्यवर्ती हिन्द महासागर के कटक पर।
- **सुमात्रा व जावा**- पूर्वी हिन्द महासागर में इण्डोनेशिया के द्वीप।

119. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **गैसें:-**

		नाइट्रोजन (N_2)	78.08%	स्थिर/ अपरिवर्तनशील गैंसे (90 km तक)
		ऑक्सीजन (O_2)	20.94%	
अक्रिय	←	ऑर्गन (Ar)	0.93%	
		कार्बन-डाई ऑक्साइड (CO_2)	0.03%	अस्थिर गैसे
अक्रिय	←	निऑन (Ne)	0.0018%	
अक्रिय	←	हीलियम (He)	0.0005%	
		मिथेन (CH_4)	0.00018%	
अक्रिय	←	क्रिप्टोन (Kr)	0.00011%	
		ऑजोन (O_3)	0.00006%	
		हाइड्रोजन (H_2)	0.00005%	
अक्रिय	←	जिनोन (Xe)	0.000009%	

120. उत्तर (3)

व्याख्या:-

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात -

- उष्ण कटिबंधीय चक्रवात निम्न अक्षांशों (कर्क व मकर रेखा के मध्य) पर 8^0 से 15^0 उत्तरी अक्षांशों के मध्य उत्पन्न होते हैं।

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात की उत्पत्ति एवं विकास के लिए अनुकूल दशाएँ-

(i) वृहद समुद्री सतह, जहां तापमान 27°C से अधिक हो

(ii) कोरिऑलिस बल का होना (हवाओं के घूमने के लिए)

(iii) उर्ध्वाधर पवनों की गति में अंतर कम होना

(iv) कमजोर निम्न दाब क्षेत्र या निम्न स्तर पर चक्रवातीय परिसंचरण होना

(v) समुद्री तल तंत्र का ऊपरी अपसरण

- भूमध्य रेखा पर कोरियालिस बल शून्य होने के कारण 5^0 उत्तर से 5^0 दक्षिणी अक्षांशों के बीच उष्ण चक्रवातों की उत्पत्ति नहीं होती है।
- व्यापारिक पवनों के प्रभाव में आकर उष्ण चक्रवातों की दिशा पूर्व से पश्चिम में हो जाती है। इसलिए ये महाद्वीपों के पूर्वी तटों से टकराते हैं।

121. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- सिन्धु घाटी सभ्यता के स्थल- सुत्कागेण्डोर, सुत्काकोह एवं बालाकोट, ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान) में स्थित है। जबकि मोहनजोदड़ों, चन्हूदड़ों, कोटदीजी एवु जुदीरजोदड़ों सिन्ध (पाकिस्तान) में स्थित है।

122. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- सिन्धु सभ्यता में जल निकास प्रणाली केवल बड़े शहरों तक सीमित न होकर छोटी बस्तियों में भी फैली हुई थी।
- सिन्धु सभ्यता में नगर नियोजन में प्रयुक्त ईंटों को धूप में सुखाकर या भट्टी में पकाकर उपयोग में ली गई थी।
- सिन्धु सभ्यता के हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों स्थलों से विशाल अन्नागार प्राप्त हुए है।
- सिन्धु सभ्यता में घर आमतौर पर एक या दो मंजिला बनाये जाते थे।

123. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- हड़प्पा सभ्यता के स्थल एवं उनके खोजकर्त्ता या उत्खननकर्त्ता-
- लोथल - एस. आर. राव
- धौलावीरा - जगपति जोशी
- रोपड़ - यज्ञदत्त शर्मा
- रंगपुर - एम. एस. वत्स

124. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- पुराणों की संख्या 18 है।
- पुराण का शाब्दिक अर्थ है प्राचीन इसमें विष्णु, शिव, दुर्गा या पार्वती जैसी देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियाँ तथा इन देवी-देवता की पूजा की विधियों का उल्लेख किया गया।
- पुराणों में संसार की सृष्टि तथा राजाओं की कहानियां भी उल्लेखित है।
- अधिकांश पुराणों की रचना सरल संस्कृत श्लोकों के रूप में की गई है।
- **शुद्र तथा स्त्रियों को पुराण सुनने की अनुमति** थी। इनका पाठ मंदिर के पुजारी द्वारा किया जाता था।
- महाभारत तथा पुराणों का संकलनकर्ता **व्यास ऋषि** को माना जाता है।

125. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- ऋग्वेद की 21 शाखाएँ थीं, किन्तु वर्तमान में केवल शाकल, आश्वलायन एवं शांखायन शाखा ही मिलती हैं। जबकि यजुर्वेद में गद्य व पद्य दोनों में पांच शाखाऐं थी- काठक , कपिषटल, मैत्रीयणी, तैतिरीय, वाजसनेयी।

126. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- मनुष्य की आयु को 100 वर्ष मानकर आश्रम व्यवस्था को चार भागों- ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम में बाँटा गया है। इन आश्रमों का सर्वप्रथम उल्लेख जाबालोपनिषद् में मिलता है।

127. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- वैदिककाल में गोधूम (गेहूँ), यव (जौ), ब्रीही (चावल), माल (उड़द) एवं चणक (चना) प्रमुख फसलें थी।

कलाम ACADEMY

128. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमी थे जो कृष्ण के समकालीन थे।

129. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- बौद्ध साहित्य में महावीर स्वामी को निगण्ठनाथपुत्र कहा गया है।
- महावीर स्वामी ने पावापुरी में निर्वाण को प्राप्त किया।
- महावीर स्वामी के अनुयायियों को अहिंसा के नियमों का कड़ाई से पालन करना होता था।
- **पार्श्वनाथ** के अनुयायियों को **निर्ग्रन्थ** कहा जाता है।

130. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- **स्यादवाद (सप्तभंगीनय)** जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत है, इसके अनुसार ज्ञान सापेक्षिक होता हैं। अर्थात् हम एक साथ सभी पहलुओं को नहीं जान पाते है। यह जैन धर्म का ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है।

131. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- महात्मा बुद्ध ने विहार जाते समय क्रमशः एक वृद्ध व्यक्ति, व्याधि ग्रस्त मनुष्य, एक मृतक एवं एक प्रसन्नचित सन्यासी को देखा इस घटना ने बुद्ध के मन को विचलित कर दिया।

132. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- महात्मा बुद्ध ने ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में मान्यता नहीं दी।
- महात्मा बुद्ध आत्मा की अमरता में विश्वास नहीं करते थे। उनके अनुसार आत्मा शंकास्यपद विषय है।
- महात्मा बुद्ध पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म का अंतिम लक्ष्य निर्वाण को बताया है।

133. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- प्रथम बौद्ध संगीति महात्मा बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् 483 ई.पू. में सप्तपर्णी गुफा (राजगृह) में हुई थी। जिसके अध्यक्ष पूरन महाकस्यप थे।
- प्रथम बौद्ध संगीति में बुद्ध की शिक्षाओं को सुतपिटक एवं विनयपिटक में संकलित किया गया। सुतपिटक का संकलन आनन्द ने एवं विनय पटक का संकलन उपालि ने किया था।

134. उत्तर (3)

व्याख्याः-

महाजनपद		राजधानी
चेदि	–	शुक्तिमती
शूरसेन	–	मथुरा
कुरू	–	इन्द्रप्रस्थ
कम्बोज	–	राजपुर

135. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- मगध साम्राज्य की प्रारंभिक राजधानी गिरिव्रज थी इसका अन्यनाम कुशाग्रपुर था। बिम्बिसार ने कालांतर में राजगृह (आधुनिक राजगिर) को नई राजधानी बनाया जो कई सालों तक मगध की राजधानी रही। उदायिन ने राजगृह के स्थान पर पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बनाया।

136. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- वज्जि आठ राज्यों का संघ था, जिनमें से वैशाली के लिच्छवी, मिथिला के विदेह व कुण्डग्राम के ज्ञातृक प्रसिद्ध थे तथा वैशाली इसकी राजधानी थी।

137. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- जस्टिन ने चंद्रगुप्त मौर्य की सेना को लुटेरों/डाकुओं का गिरोह कहा।

138. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- मौर्य शासक अशोक के 14 वृहद शिलालेख पूर्ण या आंशिक रूप में 8 स्थानों से मिलते है।
- अशोक ने अपने चतुर्थ वृहद शिलालेख में भेरीघोष की जगह धम्मघोष को अपनाने को कहा है।

139. उत्तर (2)

व्याख्याः-

मौर्यकालीन अधिकारी		दायित्व
प्रशास्ति	–	कारागारों का मुखिया
अन्तर्वेशिक	–	राजा की निजी अंगरक्षक सेना का अध्यक्ष
अन्तपाल	–	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
कर्मान्तिक	–	उद्योग धंधों का प्रधान निरीक्षक

कलाम ACADEMY

140. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- सारनाथ स्तम्भ पर उत्कीर्ण चार पशु आकृतियाँ:-
  1. गज (हाथी) 2. अश्व (घोड़ा)
  3. वृषभ (बैल) 4. सिंह (शेर)

141. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने सुल्तान की उपाधि धारण न करके केवल मलिक एवं सिपहसालार की उपाधि धारण की थी।

142. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- इल्तुतमिश को भारत में मुस्लिम/तुर्की शासन का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाएं और सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाया। इसने चाँदी का टंका (175 ग्रेन) एवं ताँबे का जितल नामक सिक्का चलाया।
- इल्तुतमिश ने खुत्बे में खलीफ़ा एवं स्वयं का नाम लिखवाया था।
- इल्तुतमिश ने केन्द्रीय सेना हश्म-ए-कल्ब की स्थापना की थी।

143. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- फिरोजशाह तुगलक सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के छोटे भाई रज्जब तथा राजपूत महिला बीबी नैला (हिन्दू महिला) का पुत्र था।
- फिरोजशाह तुगलक ने 24 करों को समाप्त कर केवल खराज, खम्स, जजिया व जकात नामक कर वसूल किये।
- फिरोजशाह तुगलक ने सिंचाई के लिए पांच बड़ी नहरों का निर्माण करवाया। इसने सबसे प्रमुख 150 मील लम्बी नहर, यमुना नदी से हिसार तक बनायी गयी थी (उलुगखानी नहर)।
- फिरोजशाह तुगलक धार्मिक रूप से असहिष्णु शासक था इसने ब्राह्मणों से जजिया कर वसूल किया था एवं नगरकोट के ज्वालामुखी मन्दिर को नष्ट किया और जगन्नाथपुरी के मन्दिर (उड़ीसा) को लुटा था।

144. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- सल्तनतकाल में प्रमुख/प्रमुखाध्यक्ष एवं विभाग -
- अमीर-ए-हाजिब - शाही दरबार में आने वालों की जाँच पड़ताल कर सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करना।
- सर-ए-जहांदार - सुल्तान के अंग रक्षकों का अधिकारी।
- **सद्र-उस-सुदूर - धर्म विभाग का प्रधान।**
- बारबक - राज दरबार में अनुशासन बनाए रखने वाला।

145. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- दिल्ली में जमाली-कमाली मस्जिद का निर्माण मुगल शासक बाबर ने करवाया था।

146. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- मुगल शासक शाहजहां के दरबार में **पयाग** नामक चित्रकार था जिसने **जहाँगीर द्वारा शहजादे खुर्रम को पगड़ी देते हुए का चित्र** अंकित किया था।

147. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- खानवा के युद्ध में मुगल सैनिकों द्वारा राणासांगा के ध्वजधारी हाथी को अपने अधिकार में लेने के पश्चात् करणसिंह डोढिया ने सांगा के हाथी को पुन: प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

148. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- 1573 ई. में मालवा के मिर्जा बन्धुओं ने अकबर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया जिसे दबाने के लिए अकबर ने बिकानेर शासक रायसिंह राठौड़ को मालवा भेजा था।

149. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- 1648 ई. में मुगलों कन्धार अभियान में राठौड़ जसवंत सिंह द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई जिससे प्रसन्न होकर मुगल शासक शाहजहां ने जसवन्त सिंह को हिण्डौन का परगना प्रदान किया था।

150. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- कच्छवाह शासक भगवन्तदास की मृत्यु के समय उसका पुत्र मानसिंह बिहार का मुगल सुबेदार था।
- मानसिंह के शासक बनने पर अकबर ने मानसिंह को टीका भेजकर राजा का खिताब तथा 5000 के मनसब को पक्का कर सम्मानित किया। शासक बनने के पश्चात् मुगल सुबेदार के रूप में मानसिंह ने सर्वप्रथम गिधोर के राजा पूर्णमल को परास्त कर मुगल अधीनता स्वीकारने हेतु बाध्य किया।

कलाम ACADEMY